केंदीय संस्कृत विश्वविद्यालय
दिल्ली

पुस्तकपरिचर्चा अप्रैल-2024 प्रतिवेदन

दिनांक 10 अप्रैल 2024 को पुस्तकालय में पुस्तक चर्चा का आयोजन किया गया, पुस्तकपरिचर्चा सत्र का आरंभ सरस्वती वंदना से हुआ।
परिचर्चा सत्र में प्रोफेसर मधुकेश्वर भट्ट जी ने डा. काशीनाथ न्यौपाने जी की पुस्तक 'प्रमाण वार्तिकम्' पर चर्चा करते हुए शोध छात्र-छात्राओं को पुस्तक के आमुख पृष्ठ को आवश्यक रूप से पढने का सुझाव दिया, उन्होंने बताया की केवल आमुख पृष्ठ को पढ़कर ही सम्पूर्ण पुस्तक का सार समझ में आ जाता है। क्योंकि आमुख में लेखक का स्वयं का विचार विहित होता है, इसलिए किसी भी अच्छे पाठक को पुस्तक का आमुख पृष्ठ अवश्य पढना चाहिए।

शोधछात्रों में सर्वप्रथम सुश्री डोना मंडल ने 'Dynamics of Education in India By Ajit Monda' पुस्तक पर अपना प्रस्तुतिकरण दिया, डोना ने प्राचीनकाल से लेकर आज तक की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति पर प्रभावी ढंग से विचार रखा, स्त्रीशिक्षा पर राजा राममोहन राय एवं ईश्वरचंद्र विद्यासागर के विचार भी प्रकट किए।

श्री आंद्रे ने 'Sanskrit Parsing by , Amba Kulkarni' पुस्तक पर परिचर्चा की शाब्दबोध व्याकरण पर आधारित इस पुस्तक को व्याकरण में संगणक जनित शोध के लिए उपयोगी बताया एवं इसके विषयवस्तु पर भी सार रूप में चर्चा किया।

शोधछात्र श्री विनय शुक्ल ने परिचर्चा सत्र का संचालन किया, श्री रामराज शुक्ल ने विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक गीतामृतम् पर सार रूप में चर्चा की।

शिक्षा शास्त्र के शोधछात्र श्री श्रीश समीर ने दो पुस्तकों 1 Data Analysis Using SPSS by D.N. Sansanwal 2 Advanced Sociological Perspective on Education by Shyamsundar Bairagya Sridipa Sinha पर परिचर्चा की, श्री श्रीश ने बताया कि दोनों पुस्तकें शोध छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। एवं नई शिक्षा नीति के उपर आधारित है। श्री श्रीश ने बताया कि वे इस पुस्तक के लेखक श्री डी. एन. संसवाल से भी अत्याधिक प्रभावित हैं। एवं SPSS से डाटा एनालिसिस के कार्य भी शोध के लिए करते हैं।

विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. पी.एम. गुप्ता ने संस्कृत शोधछोत्रों के इस प्रकार तकनीकि में भी सम्यक् रूप से रूचि को, व उनको परिचर्चा करते हुए देखकर प्रसन्नता व्यक्त की।

शोधछात्र श्री विनय शुक्ल ने विश्वविद्यालय से प्रकाशित पुस्तक शैक्षिक गुणोत्कर्ष पर विस्तृत चर्चा की। इस शोधछात्र ने ग्रन्थ में प्रकाशित 13 शोध निबंधो को स्वाध्याय शिक्षा एवं शोध के लिए उत्प्रेरक बताया।

चर्चा सत्र को आगे बढ़ाते हुए डॉ. विजय दाधीच जी ने पुस्तक परिचर्चा कार्यक्रम पर प्रसन्नता व्यक्त की एवं कहा कि Data Analysis using SPSS बहुत उपयोगी पुस्तक है। यह मेनीपुलेशन के लिए बहुत अच्छा है, उन्होंने कहा कि भविष्य में शोधछात्रों को आवश्यकता हुई तो वह स्वयं इसके लिए उनको प्रशिक्षण देंगे कि SPSS किस प्रकार शोधछात्रों द्वारा प्रयोग में लाया जा सकता है।

परिचर्चा के अग्रिम क्रम में प्रो. सुज्ञान कुमार महान्ति जी इस कार्यक्रम पर हर्ष जताते हुए शोधछात्रों को कुमारिल भट्ट एवं उनके शिष्य प्रभाकर की एक कथा के माध्यम से रोचक ढंग से परिचर्चा में गुरूजनों की उपस्थिति को सार्थक बताया।

डॉ. पवन व्यास एवं डॉ. गणेश पण्डित जी ने भी परिचर्चा पर सार्थक एवं सार रूप में उद्बोधन दिया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. बनमाली विश्वाल जी ने छात्र-छात्राओं द्वारा संस्कृत में प्रस्तुति देने पर प्रसन्नता व्यक्त की। एवं अधिकाधिक रूप से प्रतिभाग करने के लिए आह्वान किया। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि शोधछात्रों को अनिवार्य रूप से संस्कृत में ही पुस्तक परिचर्चा करनी है। अध्यक्ष महोदय ने परिचर्चा के लिए पूर्व निर्धारित सभी पुस्तकों विशेष कर How to Love in Sanskrit, शैक्षिक गुणोत्कर्ष, Data Analysis Using SPSS, Advanced Sociological Perspective on Education, गीतामृतम्, प्रमाण वार्तिकम्, Education for Mental Health आदि पर समीचीन प्रकाश डालते हुए सभी प्रतिभागियों से प्रस्तुतिकरण पर समीक्षा करते हुए अपना अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। उपस्थित सभी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. स्नेहलता उपाध्याय सहा.पुस्तकालयाध्यक्ष ने किया। परिचर्चा कार्यक्रम का समापन शांति मंत्र से किया गया।

B. Bishwal 10/04/2024
प्रो. बनमाली विश्वाल
अध्यक्ष

Sneh 10.4.24
स्नेहलता उपाध्याय
संयोजिका